

पैग़म्बर का अख़लाक़

आयतुल्लाहिल उज़्मा सैय्यदुल उलमा सै० अली नकी नक्वी

ये हज़रते अहदियत (अल्लाह) का इरशाद है अपने हबीबे खास सरदार अम्बिया हज़रते मोहम्मदे मुस्तफ़ा (स.अ.व.व.) को मुख़ातिब करके यकीनन तुम एक बड़े ख़ल्क के दरजे पर हो।

ये सनद ख़ालिफ़ की तरफ़ से पैग़म्बर के कमाले अख़लाक़ की, और होना भी चाहिए क्योंकि पैग़म्बर वो था जो नौए इन्सानी की तकमील के लिए सब से आख़िरी नमूना था। यानि जितनी जितनी बशरियत की तरक्की होती रही उतनी कामिल मिसाल पेश की जाती रही।

एक लाख चौबीस हज़ार अम्बिया की तालीमी मिसालों के बाद जब आप (हमारे पैग़म्बर स०) को ख़ातेमुन्नबियीन बनाकर भेजा तो ज़रूरी है कि आप कमाले इन्सानी का बेहतरीन मुजस्समा हो, वरना कुदरत का इन्तिखाब ग़लत होगा, मक्सदे तालीम हासिल न होगा। नाकिस नमूने सामने आकर ख़ल्क की निगाह में पस्ती पैदा होगी जिस से ख़लिफ़ के कमाले जात पर धब्बा आएगा, इसलिए ज़रूरत हुई कि आख़िरी मुअल्लिम और रहबर ऐसा ही हो जो कमाले इन्सानी की आख़िरी मन्ज़िल पर होता कि उसको देखकर आलमे इम्कान के अफ़राद हर उस नुक़्ते पर पहुँच सकें जिस तक इम्कान के ज़र्फ़ में सलाहित है और जहाँ तक पहुँचाना इस काएनात के ख़लिफ़ को मद्दे नज़र हो सकता है।

इसलिए जहाँ कुरआन ने आपके आख़िरी मुअल्लिम होने का पैग़ाम सुनाया, इन अल्फ़ाज़ में कि मा काना मुहम्मदुन अबा अहादिम मिर रिजालिकुम वलाकिन रसूलल्लहि व ख़ातमन नबियीन (सूरए एहज़ाब आयत नं० 40) इसी के साथ आपके कमाले अख़लाक़ की गवाही दी इन अल्फ़ाज़ में कि, **इन्नका लअला ख़ुलुकिन अज़ीम**

“ तुम बड़े ख़ल्क के दरजे पर फ़ाएज़ हो। ”

(सूरए कलम आयत नं०—4)

ये ऐसी सनद है जिससे बढ़कर कोई सनद नहीं हो सकती। मालूम होना चाहिए कि अल्फ़ाज़ की क़दरो कीमत मुतकल्लिम के इख़तिलाफ़ से बदल जाती है। कोई छोटा शख्स अगर किसी चीज़ को अज़ीम कह दे तो ये उसकी हकीक़ी अज़मत की दलील नहीं, क्योंकि ये खुद छोटा, उसकी निगाह छोटी, उसका पैमाना ग़ौरो फ़िक़र छोटा, कोताह नज़र, इत्तेला महदूद, हौसला तंग, इसलिए हर ज़रा सी बड़ी चीज़ को ये बड़ा समझता और कह देता है। लेकिन अगर कोई बड़ा किसी शय को बड़ा कहे तो मालूम होगा कि ये वाकई कोई बड़ी चीज़ है। आलमे तसव्वुरो ख़्याल में ख़लिफ़ से बुजुरगो बरतर कोई हस्ती नहीं, फिर वह खुदा वन्दे अज़ीम अगर किसी शय को अज़ीम कह दे तो मानना पड़ेगा कि उस जिन्स की तमाम चीज़ों में उससे बढ़कर अज़ीम कोई नहीं।

अब आपको अन्दाज़ा हुआ कि रसूल के ख़ल्क को जो वह तकीदो तहकीक़ के साथ कह रहा है कि यकीनन ज़रूर बिज़्ज़रूर ये खुलके अज़ीम है तो इससे ये पता चलता है कि नौए बशर में अज़ आदम ता इख़ितामे आलम कोई ऐसा नहीं हुआ जो हमारे रसूल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (स.अ.व.व.) के मिस्ल ख़ल्क रखता हो।

ख़ल्क के मानी समझने में हमारे उरदू मुहावरे की बिना पर ज़रा धोखा होता है। हम जब ख़ल्क का लफ़ज़ सुनते हैं तो हमारा ज़ेहन मुन्तिक़िल होता है उस मफ़हूम की तरफ़ कि इंसान का बरताव दूसरों के साथ बहुत ख़क़साराणा हो, वो हर एक से झुककर मिले और तवाज़ो से पेश आए मगर अरबी ज़बान के मुहावरे में ख़ल्क के

मानी इतने ही नहीं हैं। इसका मफहूम बहुत ज्यादा वसी है, इंसानी औसाफ़ दो तरह के होते हैं एक वो जो उसके इराद व इख्तियार से मुताल्लिक नहीं है। जैसे ख़त व ख़ाल, शक़ल व शमाइल, रंग-रूप, क़दो क़ामत, ज़हानत, ज़कावत वगैरह। ये सिफ़तें जो कुदरती किसी में पाई जाती हैं उनको कहते हैं खुल्क़। दूसरी वो सिफ़तें होती हैं जिनके मातहेत इरादी अफ़आल अन्जाम पाते हैं। जैसे सच्चाई, अमानतदारी, फ़य्याज़ी वगैरह, इस तरह के औसाफ़ को खुल्क़ कहते हैं। ख़्वाह इफ़िरादी ज़िंदगी से मुताल्लिक हों, ख़्वाह इजतेमाई ज़िंदगी से। अब आपने ख़्याल किया कि रसूल को जो खुलके अजीम पर फ़ायज़ कहा गया है इसके मानी ये हैं कि ज़िंदगी के हर शोबे में आपके इल्मी कमाल की तसदीक़ की गई है और हकीक़त ये है कि आपकी अख़लाकी बलंदी एक ऐसे नुक़ता पर थी जहाँ दोस्त दुश्मन की गरदनें ख़म थीं। बचपने से आपकी सच्चाई और अमानतदारी का ये हाल था कि मुशरेकीन कुरैश ने आपका नाम रख लिया था सादिक़ ओर अमीन और आपको उन दोनों लक़बों के साथ मुलक्किब करके गोया आपकी रिसालत का पेशगी कलमा पढ़ लिया था। क्योंकि सादिक़ जो है उसका दावा झुटा कैसे हो सकता है? और जो अमीन हो वह पैग़ाम पहुँचाने में ख़यानत कब कर सकता है? आपको आपको सादिक़ और अमीन मानना इस अम्र का इक़रार था कि जो दावा आप करें वह सही है और जो पैग़ाम आप पहुँचाएं वह दुरुस्त है। ये और बात है कि जाती अग़राज़ सरे तस्लीम ख़म करने से सदे राह हों। लेकिन दिल का यकीन किसी के बस की बात नहीं। इसी लिए कुरआन ने साफ़ कह दिया है कि इन्होंने साफ़ इन्कार कर दिया है। (सूरए नम्ल आयत न.14) हालाँकि दिलों को उनके यकीन है वही कि जो आपके ख़िलाफ़ सर तोड़ कोशिश करते थे और आपकी सदा के ख़ामोश करने बल्कि आपकी हस्ती को फ़ना

करने का बेड़ा उठाए हुए थे, वही दिल से यकीन रखते थे कि ये सच्चे खुदा के रसूल हैं और आपकी अमानतदारी पर ईमान इतना मुस्तहक़म था कि वही लोग जो आपके ख़ुन के प्यासे थे और दुश्मन थे उनकी भी अमानतें आपके पास मौजूद थीं। उस वक़्त तक कि जब तक आपने मक्कए मुअज़्ज़मा से हिजरत फ़रमाई है और ये मुशरेकीन कुरैश की अमानतें ही थीं, जिनकी ख़ातिर आपने अपने इब्ने अम हज़रत अली-ए-मुरतज़ा (अ0) को अपनी जगह पर मक्के में छोड़ दिया और फ़रमाया कि जब तक मुशरेकीन की अमानतें वापस न कर लेना मेरे पास न आना। अली (अ.) ने जब अमानतें वापिस कर लीं जब मदीने तशरीफ़ ले गए। ये आपके इख़्लाक़ की मेकनातीसी कशिश ही थी जो दिलों को आपकी तरफ़ ज़ब्ब करती थी। एक तरफ़ मुरब्बत, तवाज़ो, हिल्म, तहम्मुल, अफ़व, करम, सख़ावत ये सिफ़तें आप पर ख़त्म थीं। दूसरी तरफ़ इस्तेक़लाल, सिबाते क़दम, जफ़ा कशी और कुव्वते क़ल्ब में अपना नज़ीर न था।

हुकूकुल्लाह एक तरफ़ अदा हो रहे थे और हुकूकुन्नास दूसरी जानिब। खुदा की इबादत इस तरह कि पाओं पर वरम आ गया। आख़िर आयत उतरी " ए तय्यिबो ताहिर! हमने तुम पर कुरआन इसलिए नाज़िल नहीं किया है कि तुम इस क़दर तकलीफ़ बर्दाश्त करो।" (सूरए ताहा, आयत 1 व 2) दूसरों के साथ बर्ताव का ये आलम कि जिस से मुलाक़ात होती थी हज़रत खुद सलाम में इब्तेदा फ़रमाते थे। कुशादह पेशानी और बशाशत से गुफ़्तगु फ़रमाते, रास्ता चलने में पसे पुश्त से अगर कोई आवाज़ देता तो आप सिर्फ़ चेहरा उसकी तरफ़ मोड़कर देख लेना अख़्लाक़ के ख़िलाफ़ समझते बल्कि पूरे क़द से उसकी तरफ़ मुतवज्जे होते थे। आज हम में कोई बड़ा आदमी हो जाता है तो मुंह देखकर बात नहीं करता। अब्तेदा ब सलाम का क्या ज़िक़र, जवाबे सलाम में भी तकल्लुफ़ होता है मगर रसूल की अपनी

अज़मत के साथ ये हालत थी।

हज़रत की मसावात पसन्दी का ये आलम था कि मरजुल मौत में मिम्बर पर तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया अगर मेरे हाथ से किसी को ईज़ा पहुँची हो तो वह अभी मुझसे बदला ले ले। सवादह बिन कैस मजमें में से खड़ा हो गया और अर्ज किया या रसूलल्लाह एक रोज़ आप नाक़े पर सवार तशरीफ़ लिये जा रहे थे आपके हाथ में ताज़ियाना था, मैं नाक़े के करीब से होकर गुज़रा, इस हालत में कि आप नाक़े को ताज़ियाना लगा रहे थे, वह ताज़ियाना मुझपर पड़ गया और मुझको उससे तकलीफ़ हुई मैं उसका किसास चाहता हूँ। हज़रत ने बिलाल से फ़रमाया कि जाकर हमारा ताज़ियाना ममशूक़ ले आओ। बिलाल गए अस्हाब में बेचैनी पैदा हो गई कि इस बीमारी की हालत में रसूलल्लाह(स.अ.व.व.) इस तकलीफ़ को कैसे बर्दाश्त करेंगे। सब समझा रहे हैं मगर सवादह किसी तरह रज़ामन्द नहीं होता। आख़िर ताज़ियाना आया। रसूल सलअम ने उसके हाथ में दे दिया। फ़रमाया कि भाई किसास ले ले। सवादह ने अर्ज किया। या रसूलल्लाह(स.अ.व.व.) जब आपने मेरे जिस्म पर ताज़ियाना लगाया था तो उस वक़्त मेरे जिस्म पर पैराहन न था। आपने बरैहना जिस्म पर ताज़ियाना लगाया था। ये सुनना था कि हज़रत ने पुश्ते मुबारक से लिबास को हटा दिया। जिसमे मुबारक का खुलना था कि सवादह ने बढ़कर मोहरे नुबुव्वत को बोसा दिया। कहा, क्या मजाल मेरी जो इस जिस्म से ताज़ियाना मस करूँ। अच्छा हुआ कि सवादह ने पहले अपने किसास से दर गुज़र न किया, दुनिया को मालूम तो हो गया कि हमारा पैग़म्बर अमल के किस नुक़्ते पर है। वह जो कहता है उसे अमल की आख़िरी हद तक पहुँचा देता है। सवादह की निगाह में रसूल के जिस्म की इज़्ज़त थी। उसने पुश्ते मुबारक की ज़ियारत के बाद ये ज़ुरअत न की कि वह ताज़ियाने को मस करे। हाए अफ़सोस करबला वालों को कौन समझाए

कि हुसैन (अ.) का जिस्मे मुबारक जिसपर तलवारें और नैजे पड़ रहे हैं दर हकीक़त रसूल का प्यारा जिस्म है। मगर अफ़सोस उम्मतें रसूल ने उस जिस्म की कोई इज़्ज़त न की। तलवारों से टूकड़े कर डाला। (माखुज़ अज़ पयामे अमल, इमामिया मिशन लाहौर, पाकिस्तान, अक्टूबर 1957ई. स.4)



(बक़िया पेज नं० 13 का.....)

एबादह अन्सारी को बीस हज़ार की फ़ौज के साथ आगे रवाना किया और खुद मुक़ामे दैर कौब के करीब साबात में जाके क़याम किया। यहाँ पहुँच कर नुमायों तौर से आपको अपने साथियों की सर्द मुहरी का मुशाहिदा हुआ। आपने उन लोगों को जमा करके खुतबा इरशाद फ़रमाया जिसका मज़मून यह था कि “देखो मैं तमाम ख़ल्क से ज़्यादा ख़ल्के खुदा का बही ख़्वाह (बेहतर) हूँ और मुझे किसी मुसलमान से कीना नहीं। आगाह होना चाहिए कि इत्तेफ़ाक़ व इत्तेहाद चाहे तुम्हें नापसन्द हो इख़तेलाफ़ व इफ़तेराक़ से बेहतर है चाहे वह तुम्हें कितना ही पसन्द हो। याद रखो कि मैं तुम्हारे फ़ायदे के लिए तुम से बेहतर सोचने का हक़ रखता हूँ। तुमको लाज़िम है कि मेरी राय से इन्हेराफ़ और मेरे हुक्म की मुख़ालिफ़त न करो। आपकी तक़रीर का ख़त्म होना था कि मजमे में बद-नज़मी पैदा हो गई और ख़वारिज ने पुकार पुकार कर कहना शुरू किया कि यह काफ़िर हो गए, कुछ लोगों ने आप पर हमला करके आपके क़दमों के नीचे से मुसल्ला खींच लिया और दोशे मुबारक पर से चादर भी उतार ली। आप फ़ौरन घोड़े पर सवार हो गए और आवाज़े बलन्द से पुकारा कि कहाँ हैं रबीआ और हमदान। यह दोनों क़बीले इधर उधर से दौड़ पड़े और शोरिश पसन्दों को आपसे दूर किया।²¹

21 इरशाद पेज/194